

२०३ मन्त्र मेधाभायोस्तोत्रं

वृत्ति शक्ति मूल मेधा वर



आशा मरुक्कि

ASHA ARCHIVES

2995



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ तव उ
वाच ॥ नमस्त्यागिना लोमायाः दुविप्र
पुत्रहे नविः ॥ यस्याः समर्पिताः सर्व
सिद्धिप्रदायकः ॥ १ ॥ शिववक्त्राणि
गदविः युष्मत्पुत्राधिपतयः ॥ २ ॥ तव
वः ॥ स्वर्गलोहितं सर्वद्वयवर्हिणः ॥
॥ २ ॥ नमस्त्यागिना लोमायाः सर्वद्वयवर्हिणः

मदा ॥ नमो भुक्त न हा माया सिद्धि रताव
 गतिनि ॥ ३ ॥ मोहिनि नय म ध्व ॥ ४ ॥ घट्टा
 धा नवातिनि ॥ सदा काश च न देवि मरुदा
 मि ससं विरु ॥ ५ ॥ भादि साद स च का कि
 हेन वातं म नू पिहि ॥ ६ ॥ भक च ह न पव
 मे मं नु ॥ सदा धृ गिकल व न ॥ ७ ॥ त्वं ॥ ८ ॥
 त्वं हि कि ॥ व त्वं ॥ ला क्क विना गि नि ॥

महा प्रलय स न ॥ १ ॥ लका वि हति गान
 ना ॥ २ ॥ त्वं मा यु ॥ प न मा गि च ॥ स ग्रा म
 वि रु या व हा ॥ न जी श्री वी र नू प ल न
 प्र श्री रु य धा त्रि ली ॥ ३ ॥ श्री रु र क रु द्ध
 य द वि श्री का ना गि को रु म ॥ श्री का ग
 स नू ए ड स व नू रु य पी ॥ ४ ॥ दू दू स
 प्रा ॥ द व वी श्री रु र स व दू या मी त्रि
 ॥

६॥०॥ ल सुट पत्र से न्याना लं ह निप्रक्ता
कमा ॥६॥ क्रौ क्रौ क्रौ ह क्रौ सु व द्रुका
नाथ अनियुक्ता लि क ॥७॥ क्रौ क्रौ क्रौ
॥ व ह्य छ ह दु या गिनी ता महा दय ॥८॥
ॐ क्रौ लुवा महा द वि ह न व न महा ल
नां ॥९॥ क गालि झं विनि हि द्य नि गि ना
पत्र म ॥१०॥ ॥११॥ दाल क त्या श्रि वरु

क्रौ या गिनी ग ल मी ते, ॥१२॥ ॥१३॥ दू ल्मा व
गदा लं ह्य क द्रु प वि ग्र ह ॥१४॥ लि नि ॥१५॥
व त दा ल्य ह लो व प न्न क प यो धा ता ॥
सा द्य द ह ल सा ष्ट ग रा ह र्ग का रि त म प्र ल
॥१६॥ म क को णि य व ल्मा च का ला द्रा द क
ग्री षु ला कि मि रु ति वि व च नं था ह नं रि
मु ह्म मु कु ॥१७॥ ॥१८॥ श्री ह न व ड वा च ॥ यदि द

विप्रसंतातं यदि स ह कल प्रया ॥०॥ दूर्धम
हे नव रूपं युज्यत्युक्तिमानवा ॥१॥ य
त्वामचन त्रय्यननां मक्ति पत्रमववती ॥
कथां म धि क्कामं सं सं ए विरवकिनि
त्य ॥१६॥ अथ द क वे ता द वी पुन न
न हि ग न धा ॥१७॥ प्र वं प्र क व व द न ए त वा
वा र व द म व वी क ॥१८॥ न क ल ० हि य ८

प्रि कि ४ वि न र स्था य ग कि द ४॥ त व नि का
मान प्रा कि प त ह व मान वी ॥१९॥ न वि ष
क ४ म ग द ह न व सा ती प्र व रु ति गान ग ह
था ध य ल स्य ता का त म न धि ए व क ॥२०॥
वृत्ति क प वा ग म व स म नान्य क गान्य
म पि ॥ वि प रि ता नि गान्य स्य ४ क सि न
द ए वा कि को ॥२०॥ न न स्था म य गान्य

४ निगमः सृष्टिः गो० द० वी० स० पू० अ० य०
क० ग० ध० पु० य० आ० दा० रा० न० ता० ॥ २१ ॥ नैव ध०
नु० प० द० य० कु० पा० ० य० वा० त० हा० हा० रु० ॥ ० सा० चि०
दी० व० का० ले० न० ल० ह० क० वा० कु० र० रु० ॥ २२ ॥ १
थ० ग० म० दि० न्य० पू० न्य० प्रा० क० का० ल० पु० थ० ले० ता०
म० दी० धा० यि० ए० व० कु० हा० न० य० हा० स्त्री० व० ए० व०
त० पा० ॥ २३ ॥ ग० म० दि० न्य० पू० न्य० प्रा० क० का० ल० पु० थ० ले० ता०

द० व० न० ४ च० गि० ॥ य० पु० ग० हा० रि० व० क० कि० क० त० य० अ०
क० द० व० हा० न० त्रि० ध० ॥ २४ ॥ न० क० ग० हा० का० वा० ग०
त्य० क० दा० चि० दु० पि० गा० य० क० ॥ न० पा० य० चि०
र० लो० म० थू० ॥ न० व० हा० व० न० य० य० ॥ २५ ॥
१ व० पु० ला० वा० हा० द० वी० ४ य० य० द० ध० य० क० क० ग०
क० ॥ ०० कि० म० कु० मा० हा० मा० पा० हा० हा० मा० फ० ४
४ ध० व० ४ ४ ध० वा० म० म० दा० य० ना० दि० य० क० ॥

आर्य समाज प्रकाशिका
ARCHIVES

2995

धौं ग्रा हं सा

॥ १०० ॥ हं ग्रा मित्रा वा ॥ गं ग्रा एदु काली पा
२॥ वं ग्रा उरु सात्मा पा ३॥ मि ग्रा सातिनी
पा ४४॥ सु ग्रा कोलि नं ग्रा ति हं का पा
५॥ सु ग्रा कालिका पा ७॥ गं ग्रा मि
धाय पा ८॥ कं ग्रा गं ग्रा पा ९॥ मि
ग्रा ताव ग्रा पा १०॥ कं ग्रा पुं ग्रा पा ११॥
मुं ग्रा ख व ग्रा पा १२॥ मुं ग्रा कि कि

नी पा १३॥ मुं ग्रा सि वा दू ग्रा पा १४॥
हं ग्रा हं का ग्रा पा १५॥ हं ग्रा कं कं पा
१६॥ हं ग्रा का ट ग्रा पा १७॥ नं ग्रा कं ग्रा कि
पा १८॥ मि ग्रा मि ता य पा १९॥ गं ग्रा मि
नि नी पा २०॥ धौं ग्रा स वं ग्रा पा २१॥
॥ गं ग्रा लं का य पा २२॥ मुं ग्रा वा मुं ग्रा
पा २३॥ रं ग्रा पि का लि का पा २४॥ रं

आनय नाय २५॥ छीं श्री विजया पा १६॥
किं श्री हीमाय पा २७॥ निं श्री सां कि
नी पा २८॥ किं श्री हं गदा मृति पा २९
॥ निं श्री काल नि पा ३०॥ विं श्री कला
वलि पा ३१॥ चं श्री कृष्ण का पा ३२॥
ॐ विवकीं श्री कृती मूल मन्त्र ॥

